International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बदलते परिवेश में लघु एवं कुटीर उद्योग का ग्राम्य विकास पर प्रभाव

डॉ. जय प्रकाष

असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल विभाग), एफ.एस. विष्वविद्यालय, षिकोहाबाद

सारांश

लघु एवं कुटीर उद्योग अपनी वस्तुओं का उत्पादन करके राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान देते हैं। यदि इनके तकनीकी स्तर पर सुधार किया जाये एवं बिजली से संचालित मषीनों के उपयोग की सुविधायें इन्हें प्रदान की जाये तो लघु उद्योगों की उत्पादकता में सुधार किया जा सकता है और राष्ट्रीय उत्पादन में इनके और अधिक योगदान की आषा की जा सकती है।

हमारे देष में उत्पादन और राष्ट्रीय आय की वृद्धि में लघु व कुटीर उद्योगों का बहुत महत्व है। कुटीर उद्योग परम्परागत उद्योग है, इनमें कम पूँजी लगती है तथा घर के सदस्यों द्वारा ही वस्तुयें बना ली जाती है। लघु उद्योग में भी कम पूँजी लगती है। लघु उद्योग इकाई ऐसा उद्योगिक उपक्रम है, जहाँ संयत्र एवं मषीनरी में निवेष 1 करोड़ रूपये से अधिक न हो, किन्तु कुछ मद जैसे होजरी, हस्त–औजार दबाई व औषधि, लेखन सामग्री और खेलकूद सामान आदि में निवेष की सीमा 5 करोड़ रु0 तक है लघु उद्योग को नया नाम लघु उद्यम दिया गया है। सरकार अब इन उद्योगों के लिए ऋण उपलब्ध करा रही है और इससे उत्पादन बढ़ाने में मदद मिल रही है तथा बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। लघु उद्योग छोटे पैमाने की वह उद्योगिक इकाईयाँ होती है, जो मध्यम स्तर के विनियोग की सहायता से उत्पादन प्रारम्भ करती है। इन इकाइयों में श्रम शक्ति की मात्रा भी कम होती है और सापेक्षिक रूप से वस्तु एवं सेवाओं का कम मात्रा में उत्पादन किया जाता है। ये उद्योग बड़े पैमाने के उद्योगों से पूँजी की मात्रा रोजगार उत्पादन एवं प्रबन्ध, आगतों एवं निर्गतों के प्रवाह इत्यादि की दृष्टि से भिन्न प्रकार के होते हैं।

प्रस्तावना

देष में उद्योगों को वर्गीकृत करते हुए इसे विभाजित किया गया है। (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग) रोजगार के अवसर पैदा करने की क्षमता के अनुसार लघु उद्योग सबसे ज्यादा योगदान देता है भारत जैसे देष जहाँ बेरोजगारी अधिक है तथा श्रम की उपलब्धता है बदलते समय के साथ समाज की आवष्यकताओं के मुताबिक लघु उद्योग की दिषा व उत्पाद निर्भर करते हैं यह उद्योग मूल रूप से औद्योगिक कौषल पर आधारित है। जिसमें कम पूँजी, थोड़े से प्रषिक्षण और सीमित मात्रा में श्रम के साथ इसे शुरू किया जा सकता है अपने परिवार के सदस्यों की भागीदारी से अच्छा उत्पादन किया जा सकता है। लघु उद्योग के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों में सही क्षेत्र का चुनाव, कच्चे माल की आपूर्ति, तकनीकी ज्ञान तथा बाजार की उपलब्धता मुख्य है।

लघु उद्योग वे उद्योग है जो विनिर्माण उत्पादन और सेवाओं के प्रतिपादन में छोटे पैमाने पर किए जाते हैं। जिसमें आधुनिक ढंग से उत्पादन कार्य किया जाता है। श्रमिकों का पूँजी निवेष भी होता है। इन उद्योगों में नियोक्ताओं और कर्मचारियों के बीच सम्बन्ध प्रत्यक्ष और सौहार्द्व पूर्ण होते हैं।

कुटीर उद्योग आमतौर पर बहुत छोटे होते हैं जो निवास स्थानों में ही स्थापित होते हैं। ये उद्योग बहुत ही कम लोगत में चालू किये जा सकते हैं। अतः इन्हें शुरू करने के लिए पैसों की व्यवस्था बड़ी आसानी से की जा सकती है साथ ही सरकारी योजनाओं का लाभ भी उठाया जा सकता है।

लघु एवं कुटीर उद्योगों को भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ माना जाता है और इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि ऐसा करना भारत जैसे कृषि प्रधान देष के लिए आत्महनन समान होगा लघु उद्योगों में श्रम के बाहर श्रम का उपयोग किया जाता है जबकि कुटीर उद्योगों में पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जाता है। एस0एस0आई0 आधुनिक और पारम्परिक दोनों तकनीकों का उपयोग करता है। जबकि कुटीर उद्योग उत्पादन और पारम्परिक तकनीकों पर निर्भर करते हैं।

भारत में निवेष सीमा को आधार बनाकर उद्योगों को सूक्ष्म/कुटीर, लघु और मध्यम उद्योगों की श्रेणी में विभाजित किया है। आम तौर पर लघु उद्योग से हमारा आषय उन छोटे मोटे काम से है, जिन्हें कुछ लोग कम पूँजी के साथ शुरू कर सकते हैं, जैसे अपने घर पर, साबुन, अगरवत्ती, मोमवत्ती, कूलर, गुड आदि बनाना इसके अलावा पारम्परिक कार्य जैसे सुनारी, लोहारी, कुम्हारी, बढ़ई, पशुपालन, सिलाई, व कृषि कार्य को भी लघु उद्योगों की श्रेणी में सम्मिलित कर सकते हैं।

लघु उद्योगों की श्रेणी में वे काम धन्धे आते हैं जिनमें मषीनों तथा पूँजी का अभाव व श्रम की प्रधानता रहती है। इसमें न बड़े बाजार की आवष्यकता होती है न ही अधिक कामगारों की घर के सदस्य तथा रिष्तेदारों के द्वारा यदि हम सेवा क्षेत्र में लघु उद्योग की निवेष सीमा की बात करें तो इसमें वे उद्योग शामिल किये जायेगें जिनमें दस लाख से अधिक तथा दो करोड़ से कम का निवेष किया गया हो। इसमें भवन तथा जमीन आदि के खर्च को सम्मिलित नहीं किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

भारत गॉवों का देष है तथा भारत में गाँवों का विकास उसकी अर्थव्यवस्था को बल देता है। अर्थात् गाँवों के विकास में देष का विकास निहित है और ग्राम्य विकास के लिए भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास अत्यन्त आवष्यक है। भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास के अध्ययन का उद्देष्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है।

इस अध्ययन के आधार पर भारत में लघु एवं कुटीर उद्योग की स्थिति का तथ्यपरक विष्लेषण किया गया है।

वर्तमान अध्ययन के आधार पर भारत में लघु एवं कुटीर उद्योग के विकास के लिए आवष्यक सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं।

लघु एवं कुटीर उद्योग में उत्पादित–उत्पाद :–

लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से हम दैनिक आवष्यकता की सामग्री, लेखन सामग्री, सौन्दर्य व श्रृंगार उत्पाद, आयुर्वेदिक औषधि, प्रिटिंग इंक, अगरवत्ती, आइस–क्रीम, डेरी उत्पाद, कन्फैक्षनरी का सामान, डिटरजेंट, प्लास्टिक वस्तुओं का उत्पादन, पेपर पिन, प्लास्टिक थैलियाँ, दियासलाई, खिलौने, विभिन्न प्रकार के मसाले, डबल रोटी, ड्राई सेल बैटरी, रेडीमेड कपड़े, विस्कुट, गुण, कपड़ों पर छपाई, नूडल्स, डिब्बा बन्द सब्जियाँ, मसाले, सॉसेज, पेंट आदि उत्पाद विभिन्न उद्योगों के द्वारा तैयार किये जाते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योग का महत्व :–

यदि हम अपने देष की अर्थव्यवस्था का स्वरूप एवं विभिन्न क्षेत्रों के योगदान का अध्ययन करें तो यह मालूम पड़ता है कि बड़े उद्योगों की तुलना में हमारी अर्थव्यवस्था में कुटीर एवं लघु उद्योगों का बड़ा योगदान है, इसी क्षेत्र में अधिक रोजगार उत्पादन के अवसर पैदा किये हैं। आज भी हमारे लघु एवं कुटीर उद्योग वित्त समस्याओं से जूझ रहे हैं। यदि उन पर सरकार ध्यान दे तो निष्चय ही यह हमारी अर्थव्यवस्था में मजबूत स्तम्भ की तरह कार्य करेगा, बड़े उद्योग देष के महानगरों तक ही सीमित है। कई मूलभूत समस्याओं जैसे बिजली, सड़क, तकनीक, कच्चे माल व बाजार की कमी के उपरान्त भी इस उद्योग क्षेत्र ने स्वयं के अस्तित्व को बनाये रखा है। हमें उम्मीद है अगर सरकार अपना ध्यान इन उद्योगों की तरफ देगी तो भविष्य में लघु एवं कुटीर उद्योग हमारी अर्थव्यवस्था में महत्वपूण्र सिद्ध होगें।

भारत जैसे विकासषील देष के आर्थिक विकास मे लघु एवं कुटीर उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका है। क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। भारत एक कृषि प्रधान देष होने के कारण भारत में सबसे अधिक गाँव है। और ये लघु एवं कुटीर उद्योगों से जुड़ जाये तो देष की अर्थ व्यवस्था की रीड़ का कार्य करेगें। वर्तमान में भारतीय निर्यात का 34: हिस्सा इन्हीं उद्योगों से प्राप्त होता है। लघु उद्योगों ने बीते 50 साल में प्रगति के अनेक सोपान तय किये हैं। आर्थिक विकास में इन उद्योगों का योगदान अहम साबित हुआ है। तथा र्गामीण इलाके में औद्योगीकरण का प्रकाष फैलाया है। जिसका प्रभाव ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पर देखा जा सकता है। अर्थात् ग्रामीण अर्थव्यवस्था दिन–प्रतिदिन मजबूत होती जा रही है तथा गॉवों में नये–नये रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

लघु एवं कुटीर उद्योग का ग्राम्य विकास पर प्रभाव :–

भारत एक कृषि प्रधान देष है। अर्थात् भारत कृषि प्रधान देष होने के कारण भारत को गाँवों का देष कहा जाता है और ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित है। अर्थात् कृषि से विभिन्न प्रकार के छोटे–बडे उद्योग जुड़े रहते हैं। यदि भारत में लघु एवं कुटीर उद्योग का विकास किया जाता है तो भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था जो कृषि पर आधारित है और कृषि से अनेक छोटे–बड़े उद्योग जुड़े हुए हैं। निष्चित रूप से यदि इन छोटे बड़े उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था काफी मजबूत होगी अधिक संख्या में लोगों को रोजगार प्राप्त होगा तथा ग्रामीण लोगों की आय में वृद्धि होगी। साथ ही उनका जीवन स्तर भी सुधरेगा। अर्थात् उनके आर्थिक एवं सामाजिक जीवन स्तर में तेजी से सुधार होगा और ग्रामीण समाज निष्चित रूप में विकास के पथ पर तेजी से बढ़ेगा।

लघु एवं कुटीर उद्योग की समस्यायें

वर्तमान समय में गॉवों की संरचना भी काफी बदल गई है और गॉवों में भी शहरों जैसी सुविधायें उपलब्ध हो गई है। जिससे बड़े–बड़े उद्योग स्थापित भी हो रहे हैं। अर्थात् छोटे–छोटे उद्योग प्रतिस्पर्धा में पिछड़ रहे हैं और धीरे–धीरे बन्द होने के कगार पर है। साथ ही ग्रामीण स्तर पर स्थापित लघु उद्योगों के लिए कच्चे माल का अभाव रहता है और जो कच्चा माल उपलब्ध होता है वह परिवहन व्यय अधिक होने के कारण उचित उत्पादित मूल्य प्रदान नहीं कर पाता है।

लघु एवं कुटीर उद्योग के विकास की नीतियाँ

आजादी के बाद से ही देष में लघु एवं कुटीर उद्योग के विकास के लिए अनेक प्रयास किये गये। सन् 1948 में कुटीर उद्योग बोर्ड की स्थापना हुई तथा प्रथम पंचवर्षीय योजना में इन उद्योगों के विकास के लिए 42 करोड़ रूपये खर्च किये गये। इसके बाद उद्योग नीति 1951, 1977, 1980, 1991, 2016, 2020 बनाई गई तथा नीतियों के अनुसार लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रमुख स्थान दिया गया। जिसके चलते औद्योगिक प्रगति व बेरोजगारी को कम करने में मदद मिली लेकिन इन उपायों के बावजूद इस क्षेत्र में विकास की रफ्तार को बहुत अधिक सफलता नहीं मिल सकी।

निष्कर्ष

लघु एवं कुटीर उद्योग के विकास से निष्कर्ष निकलता है कि इन उद्योगों से कम पूँजी में अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही अधिकाधिक संख्या में रोजगार उपलब्ध कराये जा सकते हैं। यदि इसे थोड़ा सा सरकारी प्रोत्साहन मिल जाये ऋण आदि की सुविधायें मिल जाये तो अनेकों बेरोजगारों को स्वरोजगार की प्राप्ति हो सकती है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नई दिषा प्रदान की जा सकती है। साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकेगा, बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार उपलब्ध होगें साथ ही ग्रामीण श्रम का सद्उपयोग हो सकेगा और लोगों का जीवन स्तर भी सुधरेगा, मुख्य रूप से ये उद्योग स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध करायेगें। साथ ही लघु एवं कुटीर उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण से शहरी प्रवास को भी कम किया जा सकता है।

अर्थात् रोका जा सकता है और स्थानीय अकुषल लोगों को भी रोजगार प्रदान किया जा सकता है। अर्थात् निष्चित रूप से हम ये कह सकते हैं कि लघु एवं कुटीर उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य कर सकते हैं और भारतीय अर्थव्यवस्था एवं देष के विकास में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

सन्दर्भ

1ण ॅींतउं ।ण्ज्ञण ज्ञनउंतॅण श्र्मिबज व ि्वतापदह बंचपजंस उंदंहमउमदज वद पितउ च्तवपिजंइपसपजल म्उचतपबंस म्अपकमदबम तिवउ प्दकपंश् ळसवइंस ठनेपदमे त्मअपमू 2011रू 12 ;1द्ध रू 159.173ण

2ण क्पगपज ।ण च्ंदकमल ।ण्ज्ञण ष्ेडम्े ंदक म्बवदवउपब ळतवूजी पद प्दकपं बव पदजमहतंजपवद ।दंसलेपेष जीम प्न्च श्रवनतदंस व िथ्पदंदबपंस म्बवदवउपबे 2011य 9;2द्ध रू 41.59ण

3ण ठींजजंबींतललंए ।उपज ;2008द्धए ष्ॅकमीप म्दजमतचतपेमे पद ठमदहंसरू जीम पितेज चींेम 1880.1920 त्मंकमतेए ॅमतअपबमए ज्ञवसांजंण

4ण 4ण ठमींतपए ठपचपद 1976ए श्त्नतंस प्दकनेजतपंस्रंजपवद पद प्दकपंष टपोी च्नइसपे.ीपदह भ्वनेमए च्अजण स्जकण

5ण ॅतांतए ज्ंउंस ;2009द्ध ब्सनेजमत ंदक ब्सनेजमत क्मअमसवचउमदज ल्वरंदं छवअमउइमत 2009ए च्ंहम 9

6ण टमदांजमेी ॅण डनजीपी ज्ञण ैडम्े पद प्कदपंरू प्उचवतजंदबम ंदक ब्वदजतपइनजपवद ।पंद श्रवनतदंस व िडंदंहमउमदज त्मेमंतबी 2012य 2;2द्ध रू 31.34ण

7ण उद्योग व्यापार पत्रिका अगस्त 2012 इण्डिया ट्रेड प्रमोषन आर्गनाइजेषन प्रगति भवन, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

8ण उद्योग व्यापार पत्रिका जुलाई 2011 इण्डिया ट्रेड प्रमोषन आर्गनाइजेषन प्रगति भवन, प्रगति मैदान, नई दिल्ली